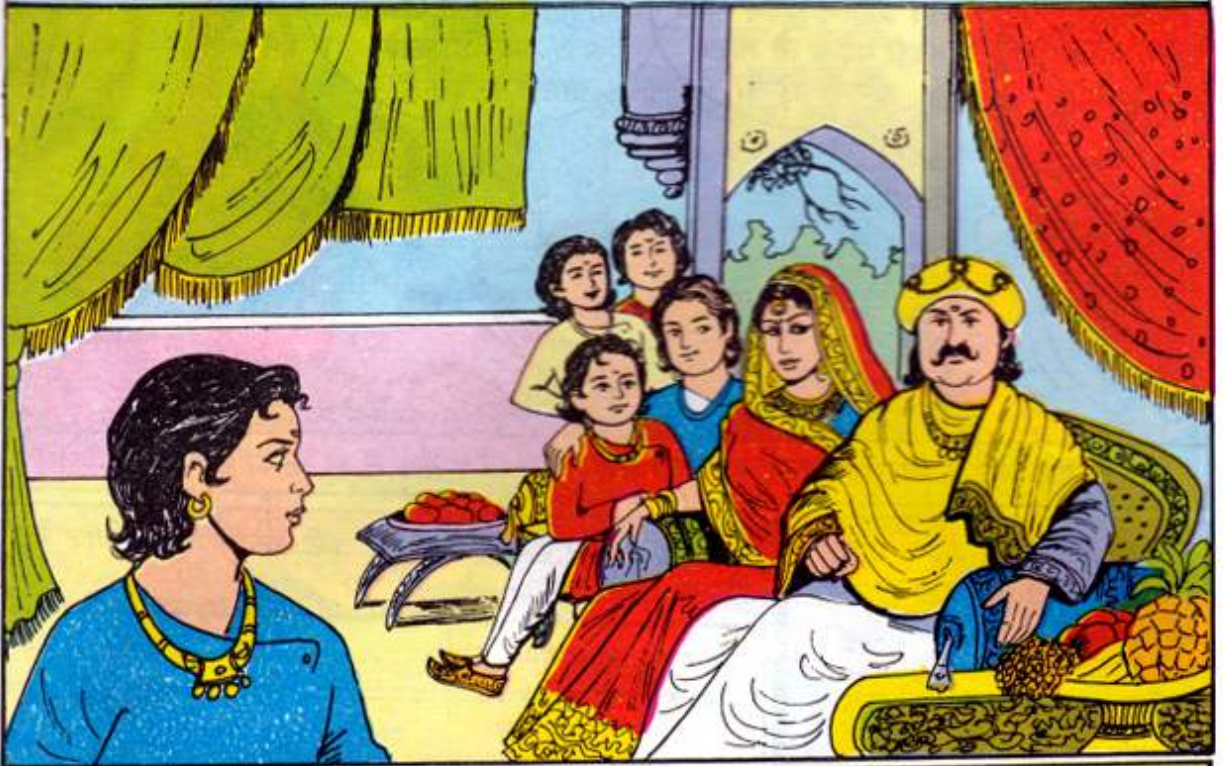


पाँच रत्न

चम्पापुर में बलभद्र नाम का एक धनवान सेठ रहता था। सेठ के पाँच पुत्र थे। पाँचों ही बड़े विनीत, सुन्दर और बुद्धिमान् थे।



इस भरेपूरे सुखी परिवार को देखकर लोग कहते—

देखो, पुण्य का फल तो सेठ बलभद्र भोग रहा है। घर में सुख-सम्पत्ति, आशाकारी सन्तान और राज में प्रतिष्ठा।

भाई, बड़ा धर्मनिष्ठ है। व्यापार में नीति और सत्यनिष्ठा इसके जैसी नहीं देखी।

उसकी दुकान पर सुबह से शाम तक दूर-दूर के ग्राहकों की भीड़ लगी रहती थी—

सत्यनिष्ठा का प्रत्यक्ष फल देखो। सेठ का व्यापार दिन दूना रात चौगुना बढ़ता ही जा रहा है।



सेट की हवेली के सामने ही नगर का राजपुरोहित श्रीधर रहता था। उसके एक पुत्र था नारायण। नारायण खेलने और घूमने-फिरने का शौकीन था। श्रीधर उसको बार-बार समझाता—



पुत्र, तू विद्याध्ययन कर। ब्राह्मण होकर विद्या नहीं पढ़ेगा तो भीख माँगनी पड़ेगी।

अरे, इसे क्या कमी है जो इतनी-सी उम्र में पोथियाँ पढ़े। अभी तो इसके खेलने के दिन हैं।

माता के लाड़-प्यार के कारण नारायण पढ़-लिख नहीं सका। मौज शौक में ही उसका बचपन बीत गया।

एक दिन नारायण को अकेला छोड़कर उसके माता-पिता स्वर्गवासी हो गये। नारायण दुःखी होकर सोचने लगा—

अब मैं अकेला क्या करूँ? पढ़-लिखा नहीं होने के कारण पिता का पद भी नहीं मिलेगा।



वह बैठा-बैठा दुःखी हो रहा था। तभी उसकी नजर दीवार पर लिखे एक श्लोक पर पड़ी—

माता शत्रु पिता वैरी
येन बालो न पाठितः।#

सच ही है। अगर माता-पिता ने मुझे पढ़ाया होता तो आज मैं इस तरह बेकार नहीं बैठा होता।



थोड़े दिन शोक में बिताने के बाद एक दिन उसने सोचा—

अभी तो पिताजी का कमाया हुआ बहुत धन है, इसलिए चिन्ता की कोई बात नहीं। अभी जवानी में तो देशाटन करके मौज करना चाहिए।



वे माता-पिता अपनी संतान के शत्रु हैं जिन्होंने अपनी संतान को शिक्षित नहीं किया।

वह देशाटन पर जाने की तैयारी करने लगा। घर का सामान सँभालते समय अचानक एक पुरानी मंजूषा उसके हाथ में आ गई। मंजूषा खोली तो वह चकित रह गया—

वाह, कितने चमकदार हैं ये पाँच रत्न। जल्द कभी राजा ने प्रसन्न होकर पिताजी को भेंट दिये होंगे।



वह मंजूषा को कपड़े में लपेटकर नगर के प्रसिद्ध जौहरी की दुकान पर ले गया और रत्न दिखाये। रत्न देखकर जौहरी चकित रह गया।

वत्स, यह तो बहुत ही कीमती रत्न हैं। कम से कम एक-एक करोड़ का एक-एक होगा। क्या इन्हें बेचना चाहते हो?

नहीं, बस, कीमत जानना चाहता था।



नारायण मंजूषा लेकर घर वापस आ गया और सुखद भविष्य के सपने देखने लगा—

अब मुझे कमाने की क्या जरूरत है। अब तो खूब मौज-शौक कलूँगा, देश-विदेश घूमूँगा। देशाटन से आकर फिर एक रत्न बेचूँगा। बड़ा घर बन जायेगा। विवाह हो जायेगा। बस मौज से रहूँगा।



भविष्य के स्वप्न सँजोकर वह मन ही मन गुदगुदाने लगा। फिर उसने सोचा—

परन्तु पीछे से मंजूषा किसी ने चुरा ली तो। इसे कहीं सुरक्षित रख देना चाहिए।

